

**क्ष पुं.** (तत्.) 1. विध्वंस, विनाश 2. हानि 3. अंतर्धान/लोप 4. खेत, कृषक, किसान 5. विष्णु का चौथा अवतार-नृसिंह 6. विद्युत 7. एक राक्षस।

**क्षण पुं.** (तत्.) 1. काल या समय का एक बहुत छोटा भाग, थोड़ी देर, लम्हा, सेकेंड के बराबर का समय 2. अवसर, अवकाश 3. शुभकाल, उत्सव, आनंद जैसे- क्षणभर के लिए तो कुछ परेशान हो गया था।

**क्षणतु पुं.** (तत्.) घाव, जख्म।

**क्षणद पुं.** (तत्.) 1. जल 2. ज्योतिषी 3. वह जिसे रात को दिखाई न पड़ता हो, रात को दिखाई न पड़ने का एक रोग, रतौंधी।

**क्षणदा स्त्री.** (तत्.) 1. रात 2. जल्दी।

**क्षणदाकर पुं.** (तत्.) चंद्रमा।

**क्षणद्युति स्त्री.** (तत्.) विद्युत, बिजली।

**क्षणन पुं.** (तत्.) 1. चोट पहुँचाना, प्रहार करना 2. हनन, वध करना 3. घायल करना।

**क्षणप्रभा स्त्री.** (तत्.) बिजली, विद्युत।

**क्षणभंग पुं.** (तत्.) 1. बौद्धों का क्षणिकवाद सिद्धांत, जिसमें वस्तुओं की स्थिति एक क्षण की मानी गई है 2. संसार वि. (तत्.) क्षणभर में नष्ट होने वाला, अनित्य, नाशवान।

**क्षणभंगुर वि.** (तत्.) शीघ्र नष्ट होने वाला, क्षणभर में नष्ट होने वाला, अनित्य, अस्थायी प्रयो. उल्का के क्षणभंगुर प्रकाश की भाँति वह हँसी मेरे मन में आशंका को दीप्त कर गई -बाणभट्ट की आत्मकथा)

**क्षणमूल्य पुं.** (तत्.) नकद दाम, तुरंत ही दी जाने वाली कीमत।

**क्षणविध्वंसी पुं.** (तत्.) 1. अनीश्वरवादी दार्शनिकों का एक समुदाय, जो यह मानता है कि संसार प्रतिक्षण नष्ट होता और नया जन्म प्राप्त करता है 2. क्षणभर में नष्ट होने वाला उपादान-संसार।

**क्षणिक वि.** (तत्.) एक क्षण रहनेवाला, क्षण-भंगुर, अनित्य।

**क्षणिकता स्त्री.** (तत्.) क्षणिक होने का भाव, क्षणभंगुरता।

**क्षणिकवाद पुं.** (तत्.) बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु को उसकी उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाला मानते हैं, जो प्रतिक्षण बदलती रहती है।

**क्षणिकवादी पुं.** (तत्.) क्षणिकवाद पर विश्वास रखनेवाला व्यक्ति।

**क्षणिका स्त्री.** (तत्.) बिजली, विद्युत।

**क्षणिनी स्त्री.** (तत्.) रात, क्षणदा।

**क्षणी वि.** (तत्.) अवकाशयुक्त, क्षणस्थायी।

**क्षत वि.** (तत्.) 1. घायल, कटा-फटा हुआ 2. क्षतिग्रस्त, खंडित, भग्न पुं. (तत्.) 1. घाव, जख्म 2. व्रण, फोड़ा 3. भय, खतरा, डर 4. दुख 5. एक प्रकार का फोड़ा जो गिरने, दौड़ने या किसी प्रकार का क्रूर कर्म करने से हृदय में हो जाता है, इसमें रोगी को ज्वर आता है और खाँसने से मुँह से रक्त निकलता है।

**क्षतकास पुं.** (तत्.) क्षतज खाँसी, क्षत या आघात से होनेवाली खाँसी।

**क्षतचिह्न पुं.** (तत्.) चोट लगने, जल जाने या फोड़े आदि के कारण पड़ा हुआ निशान।

**क्षतज पुं.** (तत्.) 1. रक्त, रुधिर, खून 2. पीव 3. एक प्रकार की खाँसी जो क्षय रोग में होती है, इसमें खखार के साथ रुधिर निकलता है और शरीर के जोड़ों में पीड़ा होती है।

**क्षतजतृष्णा स्त्री.** (तत्.) चोट लगने या शरीर से अधिक रक्त निकल जाने से उत्पन्न प्यास।

**क्षतजदाह पुं.** (तत्.) किसी घाव के कारण होने वाली जलन, जिसमें दाह के कारण प्यास, मूर्च्छा और प्रलाप आदि लक्षण होते हैं।

**क्षतयोनि वि.** (तत्.) जिस स्त्री का पुरुष से समागम हो चुका हो, जिसका कौमार्य नष्ट हो चुका हो।